



पत्र-पुष्प



निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र (9-09-18)

प्राणेश्वर अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा शुभ भावना, शुभ कामना की गोल्डन गिफ्ट द्वारा सर्व का परिवर्तन करने वाले, सर्व के शुभचिंतक निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें, ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - अभी तो देश विदेश से बाबा के बच्चे मधुबन बेहद घर में आने की तैयारी कर रहे हैं। यह मधुबन महातीर्थ हम सभी का अपना प्यारा घर, दाता का दर है। यह वरदाता, भाग्यविधाता बाप की चरित्र भूमि, कर्मभूमि, वरदान भूमि आत्मा को अनेक वरदानों से भरपूर कर देती है। इस महातीर्थ की स्मृति भी अनेक समस्याओं का समाधान कर देती है। यहाँ सभी बड़े उमंग-उत्साह से भाग-भागकर आते, अनेक अलौकिक अनुभूतियों से भरपूर हो शक्तिशाली बनकर जाते हैं। तो आप सबका ऐसी पवित्र भूमि पर सदा ही स्वागत है।

मीठे बाबा ने हम सबकी यह जीवन बहुत-बहुत वैल्युबुल बनाई है। अभी हमारी इस हीरे मिसल जीवन में अपार खुशी है, निश्चय और नशा है। हमारा पुरुषार्थ भी क्या है! मेहनत नहीं, मोहब्बत है। मोहब्बत से पुरुषार्थ सहज लगता है। जैसे हमारा बाबा सदा बेफिकर बादशाह होकर अपने नारायणी नशे में रहा, ऐसे हम सभी बाबा के बच्चे सदा उसी नशे में रहकर निश्चयबुद्धि, निश्चित स्थिति का अनुभव करते हैं। दुनिया में ऐसा कोई नहीं होगा जो कहे मैं बेफिकर बादशाह हूँ लेकिन हम सब बेफिकर बादशाह हैं क्योंकि विदेही और ट्रस्टी होकर रहते हैं। शरीर में होते भी न्यारे और प्रभु के प्यारे हैं। बाबा ने हमें अपना बनाके हल्का बना दिया है। हमारी यह पढ़ाई इतनी अच्छी है इसे जितना रिवाइज करो तो ऐसे लगता है हम बाबा के आज्ञाकारी, वफादार, इमानदार बच्चे हैं।

अब बाबा चाहते हैं कि मेरे बच्चे इस आवाज की दुनिया में रहते आवाज से परे शान्त स्वरूप स्थिति में रहकर शान्ति की शक्ति जमा करें क्योंकि इस शान्ति में ही सच्चाई है, प्रेम है, धीरज और नम्रता भाव भी है, इसमें जरा भी अभिमान नहीं है, परन्तु इसके लिए पास्ट इज पास्ट करना होगा। जो बात बीत गई उसे लगाओ बिन्दी, यही शान्त में रहने, प्रेम से चलने की युक्ति है। तो अब अन्तर्मुखी बन अन्दर से शान्त रहो, अधिक आवाज में नहीं आओ तो अव्यक्त स्थिति का अनुभव कर सकेंगे। जैसे बाबा अभी अव्यक्त वतन में बैठकर हम सबकी पालना कर रहे हैं, ऐसे अपनी अव्यक्त स्थिति बनाकर साकार और अव्यक्त रूप से जो पालना ली है, अभी फर्ज कहता है वही पालना सबको देनी है।

जैसे ब्रह्मा बाबा शिवबाबा के साथ कम्बाइन्ड रहकर सदा करावनहार की स्मृति से डबल लाइट रहे, ऐसे हम सबको भी लाइट रहना है, माइट खींचना है तब एवरीथिंग राइट होगा। इज़ी है ना। तो ऐसे लाइट रहने की पढ़ाई बाबा ने पढ़ाई है। मैं तो यही कहूँगी बाबा तेरा बनने में इलाही (अपार) सुख मिला है। तो सुखदाता के बच्चे सदा सुख की लेन-देन करते सुखदेवा बन सबकी दुआयें लेते चलो। कभी दुःख की लहर अंशमात्र भी न आये। बोलो, ऐसा ही

लक्ष्य रख उड़ती कला में उड़ रहे हो ना! अच्छा !

सभी को बहुत-बहुत याद....

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. जानकी



ये अव्यक्त इशारे



“सदा सुखदाई बनो - सुख दो और लो”

- 1) जैसे बाप के बोल, सदा सुखदाई, सदा मधुर महावाक्य हैं, साधारण बोल नहीं हैं। ऐसे आपके बोल भी हर आत्मा को सुख देने वाले सुखदाई हों। उसमें व्यक्त भाव नहीं हो। हर बोल में सदा अव्यक्त भाव, आत्मिक भाव हो।
- 2) सुखदाई स्थिति तब बनेगी जब कोई भी पुराना संस्कार, पुरानी आदतें न रहें। सदैव यही कोशिश करनी है कि हमारी चलन द्वारा कोई को भी दुःख न हो। मेरी चलन, संकल्प, वाणी, हर कर्म सुखदाई हो - यही है ब्राह्मण कुल की रीति।
- 3) परमात्म प्यार आनंदमय झूला है, इस सुखदाई झूले में सदा झूलते रहो। परमात्म प्यार अनेक जन्मों के दुःखों को एक सेकण्ड में समाप्त कर देता है। परमात्म प्यार सर्व शक्ति सम्पन्न है, जो निर्बल आत्माओं को शक्तिशाली बना देता है। ऐसे श्रेष्ठ परमात्म प्यार के अनुभवी बनो और बनाओ तो दुःखों से छूट जायेंगे।
- 4) संगमयुग पर बापदादा द्वारा सभी बच्चों को सदा “सुखदाई स्थिति” की सीट मिली हुई है। सदा इसी पोजीशन की सीट पर सेट रहकर सबको सुख दो, सुख लो। अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करो।
- 5) आप बच्चों को एक बाप से सर्व सुखदाई सम्बन्धों की प्राप्ति हो रही है तो देह के जो स्वार्थी, सुख-शान्ति का चैन छीनने वाले विनाशी सम्बन्ध हैं, अभी भाई है अभी स्वार्थ वश दुश्मन हो जाते, दुःख और धोखा देने वाले हो जाते, मोह की रस्सियों में बांधने वाले हो जाते, अब ऐसे अनेक सम्बन्ध छोड़ एक से सर्व संबंधों का अनुभव करो और सुखदाई बनो।
- 6) वर्तमान समय विश्व की हर आत्मा दुःख, दर्द से पुकार रही है। कभी किसी को तन के कर्मभोग का दर्द है, कभी सम्बन्ध-सम्पर्क से दुःखी होने का दर्द है, कभी धन ज्यादा आया वा कम हो गया, दोनों की चिंता का दर्द है, कभी प्राकृतिक आपदाओं से प्राप्त दुःख का दर्द है। ऐसे एक दर्द से अनेक दर्द पैदा होते रहते हैं। ऐसे समय पर आप सुखदाई सुख स्वरूप बच्चों का फर्ज है उन्हें जन्म-जन्म के दुःख दर्द के कर्ज से छुड़ाना। तो मास्टर दाता बन जिस आत्मा को जिस प्रकार के कर्ज का मर्ज लगा हुआ है, उनको उस प्राप्ति से भरपूर करो।
- 7) जैसे बाप दुःख हर्ता सुख कर्ता है ऐसे आप बच्चे भी मास्टर दुःख हर्ता सुख कर्ता बनो। आपका हर संकल्प हर आत्मा के प्रति वा स्व के प्रति सुखदाई हो क्योंकि दुःख की दुनिया से निकल संगमयुग में पहुँच गये हो। पुरुषोत्तम युग में बैठे हो, तो बाप समान

सुखदाता दुःख हर्ता बनो।

- 8) याद की यात्रा में सदा आगे बढ़ते रहो, यह रुहानी यात्रा सदा ही सुखदाई स्थिति का अनुभव करायेगी। इस यात्रा से सदा के लिए सर्व यात्रायें पूर्ण हो जाती हैं। यह रुहानी यात्रा की तो सभी यात्रायें हो गई और कोई यात्रा करने की आवश्यकता ही नहीं क्योंकि यह महान यात्रा है। इस महान यात्रा में सब यात्रायें समाई हुई हैं।
- 9) सदा इसी स्मृति में रहो कि हम विश्व के मालिक के बालक फिर से विश्व को मालामाल बना रहे हैं, सम्पत्तिवान बना रहे हैं, सदा सुखदाई बना रहे हैं। जब भी कोई आत्मा को देखो तो वृत्ति यही रहनी चाहिए कि इन सभी आत्माओं के प्रति बाप ने हमें वरदानी, महादानी निमित्त बनाया है। हर आत्मा के प्रति कुछ न कुछ दाता बन करके देना जरूर है। जो सुख हमें मिला है, वह सबको अनुभव कराना है।
- 10) आप सुखदाता बाप के बच्चे सुख स्वरूप हो। स्वप्न में भी आपके पास दुःख का दृश्य न आए अर्थात् दुःख के अनुभव की महसूसता न हो। स्वप्न भी सुखदाई हो। दूसरों के दुःख की बातें सुनते भी दुःख की लहर न आए क्योंकि आपके लिए दुःख की दुनिया समाप्त हो गयी। अगर दुःख देने वाले सम्बन्धी या दुःख की परिस्थिति अभी तक भी अपनी तरफ खींचती है तो समझो कुछ रस्सियां सूक्ष्म में रह गयी हैं।
- 11) हर आत्मा अनादि सम्बन्ध के स्वरूप से, एक बाप की सन्तान होने के कारण भाई-भाई लगती है। तो हर आत्मा के प्रति यही शुभभावना, शुभ कामना इमर्ज रहे कि यह सर्व आत्मायें सदा सुखी और शान्त हो जायें, इसके लिए सदा बेहद में रहो। बेहद में आने से बेहद का सम्बन्ध, बेहद का ज्ञान, बेहद की वृत्ति, बेहद का रूहानी स्नेह दुःख को समाप्त कर सुख स्वरूप बना देगा।
- 12) जैसे बाप ज्ञान का सागर, सुख का सागर है वैसे ही स्वयं को भी ज्ञान स्वरूप, सुख स्वरूप अनुभव करो। जब बाप समान सुख स्वरूप बन जायेंगे तो सुख स्वरूप आत्मा द्वारा सुख की किरणें विश्व में फैलेंगी क्योंकि मास्टर ज्ञान सूर्य हो तो जैसे सूर्य की किरणें सारे विश्व में जाती हैं वैसे आप ज्ञान सूर्य के बच्चों के ज्ञान, सुख, आनन्द की किरणें सर्व आत्माओं तक पहुंचेंगी।
- 13) दुनिया में चाहे कितना भी दुःख अशान्ति का प्रभाव हो लेकिन आप न्यारे और प्यारे हो क्योंकि आप सुख के सागर के

साथ हो। ऐसे सदा सुखी, सदा सुखों के झूले में झूलने वाले। संकल्प में भी दुःख की लहर न आये। सुख के सागर के बच्चों को दुःख का संकल्प भी नहीं आ सकता।

14) सुख के सागर के बच्चे खाते, पीते, चलते, अशोक अर्थात् संकल्प मात्र में भी शोक व दुःख को तलाक देने वाले सुख स्वरूप होंगे। जब सुख का सागर मिला तो दुःख काहे का। “सदा सुखी” - यही वरदान बाप से सदा के लिए मिल गया।

15) निर्मानता सुखदाई बना देती है। जो जितना निर्मान होगा उतना सुखदाई होगा। उसके सम्बन्ध-सम्पर्क में जो भी आयेगा,

वह सुख की अनुभूति करेगा। अगर कोई भी बात किसी की फील हो जाती है तो इसको कहेंगे दुःख लेना। अपना काम है सुख लेना और सुख देना।

16) ब्राह्मण आत्मायें सुख के सागर के बच्चे, सुख स्वरूप सुखदेवा हैं। जब दुःखधाम को छोड़ चले तो न दुःख लेना है, न दुःख देना है। सुख देने से दुआयें बहुत मिलती हैं। पुरुषार्थ में यह दुआयें एड हो जाती हैं। किसी भी बात से, चाहे कर्म से, चाहे वाणी से, चाहे मन्सा से – जब कोई सुख देता है तो उसकी मार्क्स ऑटोमेटिक बढ़ती जाती हैं। तो सुख स्वरूप बनकर सुख दो और सुख लो।

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

20-10-14

मधुबन

“पास्ट को पास्ट करके प्रेजेन्ट में रहना सीखो, सदा एक की स्मृति में रहो तो दृष्टि वृत्ति से सेवा होती रहेगी” (दादी जानकी)

बाबा का यज्ञ कितना अच्छा चल रहा है। कमाल है मेरे बाबा की जो अव्यक्त हो करके इतना बड़ा यज्ञ चला रहा है। भगवान वन्दरफुल है तो उसका यज्ञ भी वन्दरफुल है। शब्दों में क्या वर्णन करूँ, पर जिन्होंने यज्ञ सेवा में आदि से ले करके जैसे बाबा समर्पण हुआ ऐसे जिन्होंने सेवा की है, यह भी वन्दर है, उनका पद बहुत ऊंचा है।

मैं घड़ी-घड़ी पूछती हूँ हे आत्मा, तुम इस शरीर में क्यों बैठी हो? बाबा को उल्हना देती हूँ। तो गुल्जार दादी ने लेटेस्ट मैसेज दिया बाबा से भी सहन नहीं होता है, पर यह बच्ची सहन कर रही है। यह सब देखते भी इस शरीर में बिठा दिया है। अभी समय थोड़ा है, बाबा को याद करना, बाबा को फॉलो करना हम लोगों के लिए इज्जी हो गया है। कमाल है बाबा आपकी, हमको मनुष्य से ब्राह्मण ऐसा बनाया है, जो ब्राह्मण लाइफ इतनी सर्वोत्तम है। सारे कल्प के लिये यह कमाई है, सच्चाई भी है। सच्चाई और स्नेह परमात्मा कैसे देता है और दिया है देने के लिये। शरीर में निमित्त मात्र रहकर सदा ध्यान रहता है कि मैं कौन हूँ, किसकी हूँ, उसने क्या दिया, वो सब देखने जानने के लिए। सभी अन्दर से महसूस करते हैं यहाँ इनके पास क्या है?

भले किसका कैसा भी स्वभाव है, भिन्न-भिन्न संस्कार स्वभाव के लोग हैं... यज्ञ कैसे चलता है, बाबा जाने कैसे चला रहा है। कितना खर्चा होता होगा? बाबा कैसे चला रहा है! तो ब्रह्मा बाबा की शब्दों में कोई महिमा नहीं कर सकते हैं।

यह सारी पुरानी दुनिया खलास हो उसके लिये जैसे साइंसदान अपना काम कर रहे हैं, वैसे नई दुनिया बनाने के लिये साइलेंस से

वही काम करेंगे क्योंकि हमको फिर वहाँ आना है और बाबा के साथ जाना है। भाग्यशाली हम हैं जो बाबा के साथ जा रहे हैं, पीछे पीछे नहीं। अभी हमारा हर संकल्प, श्वाँस और समय सफल होता रहे बस, बाबा और कुछ हमारे पास है ही नहीं। हमारा श्वाँस संकल्प सफल हो तो और क्या चाहिए!

प्रश्न:- दृष्टि से सेवा कैसे होती है? वृत्ति से सेवा कैसे होती है, कृति से सेवा कैसे होती है? इसका थोड़ा-सा स्पष्टीकरण करें।

उत्तर:- इसका जवाब शब्दों में नहीं है, सूक्ष्म है। वृत्ति का कनेक्शन है स्मृति से। जैसी हमारी स्मृति में बाबा और बाबा की नॉलेज रहती है, उसमें भी मनोवृत्ति में ड्रामा, चक्र, झाड़ और सीढ़ी का ज्ञान भरा हुआ है। तो जो वृत्ति में होता है वैसी स्मृति बनती है, फिर वैसी दृष्टि हो जाती है। प्रेजेन्ट समय में प्रेजेन्ट रहना, जैसे भगवान को अपने सामने हूबहू देखना। सदा वह मेरे साथ प्रेजेन्ट है। हम भी प्रेजेन्ट में तभी रह सकते हैं, जब पास्ट इज़ पास्ट। पास्ट की बात, घण्टे पहले की बात भी याद नहीं हो तो इसका बहुत फायदा होता है। सीढ़ी के ज्ञान अनुसार जो पास्ट हो गया पूरा हो गया, अभी उड़के ऊपर जाना है। फिर पता है हम ऐसे नीचे आयेंगे। उसके पहले एकांत में बैठके अन्दर में सच्चाई से, प्रेम से सतयुगी दुनिया की स्थापना का काम जो बाबा करा रहा है, वह एक्यूरेट करते रहना भी सेवा है।

तो यह जो ज्ञान का सार है ना, वो स्मृति में रहे तो दृष्टि और वृत्ति काम करती है। मैं वन्दर खाती हूँ बाबा को भी मेरा यह शरीर का सहना सहन नहीं होता परन्तु बाबा ने मेरा श्वाँस,

संकल्प और समय सफल करने के लिये आत्मा को शरीर में रखा है। औरों को देखती हूँ सब कितनी सेवा कर रहे हैं, सारे यज्ञ में इतनी सेवायें हो रही हैं, इसका खर्चा कितना होगा! वन्दर है। सिर्फ मुझे ईश्वरीय परिवार के लिये अन्दर से यह भावना है कि मैं मनी वेस्ट न करूँ। वेस्ट संकल्प नहीं चलें, जितनी एकानामी से चलते हैं उतना जैसे यज्ञ से प्यार है। आश्चर्य खाने की बात नहीं है, परन्तु बाबा कैसे अपना यज्ञ चला रहा है, हमें बाबा को फॉलो करना बहुत अच्छा लगता है। प्यारे बाबा की याद है ही फॉलो करना। बाबा मुझे अपने आप चला रहा है। यह भी प्रभु लीला है। सदा यही भावना रहती है कि सारे विश्व में शान्ति ऐसी आ जावे, जो कोई के भी अन्दर से दुःख का आवाज़ न निकले, कोई भी आत्मा हो क्योंकि हर एक पार्ट अपना है, अच्छी तरह से सेवा कर रहे हैं। जैसा जिसका पार्ट वैसा उसकी बुद्धि अपने आप काम कर रही है।

प्रश्न:- हम आदि रत्नों जैसा पुरुषार्थ कैसे कर सकते हैं? और ऐसा ग्रुप कैसे बनायें? दूसरा स्थापना के संस्कार और पालना के

संस्कार में क्या फर्क है?

उत्तर:- आदि में निज ज्ञान के आधार से पुरुषार्थ करते थे, मेहनत नहीं थी, लेकिन जैसे बाबा ने समर्पण किया उसको फॉलो किया। यह सब पूर्वजों ने एक एक ने यह किया, यह देखा, वन्दरफुल है, एक एक को जानती हूँ। हरेक का डायरेक्ट बाबा से सम्बन्ध है, बाबा का बच्चा हूँ, यह पक्का था। इन आदि रत्नों ने जो सेवायें की हैं वो सेवायें अभी तक भी स्थापना के कार्य में पालना दे रही हैं। इन सभी ने जो बाबा से पाया है वो वायब्रेशन के रूप से पालना का काम रहे हैं। ऐसा पुरुषार्थ अभी करने कराने के लिए सभी निमित्त बनें। यह मीटिंग आदि भले करो लेकिन यह जैसे स्थूल बातें हो जाती हैं। इन पूर्वजों ने पद का कोई ख्याल नहीं किया, स्थापना और पालना के कार्य में सदा तत्पर रहे। उस समय किसी को यह नहीं था कि हमारा पद ऊंचा होवे, बाकी हड्डी सेवा करते रहते थे। पूर्वजों की एक एक की हिस्ट्री सुनो तो बहुत वन्दर लगेगा। अच्छा।

दूसरा क्लास - 28-10-18

“कोई कैसी भी बात हो जाये माफी मांग लो व माफ कर दो तो विघ्न हट जायेंगे”

अन्तर्मुखता से एकाग्रता की शक्ति बढ़ती है। अगर बाहरमुखता का थोड़ा भी संस्कार है, बाहर की बातें सुनना सुनाना असुल जन्म से ही हम नहीं जानते हैं। सुबह बाबा की मुरली से ऐसी बातें मिलती हैं जो एक बात भी अन्दर ऐसी लग जाती है तो सारा दिन वो काम करती है। बाबा कहो तो बाबा ने जो सिखाया है वही याद आता है। भले हम सब सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे हैं पर ज्ञान कहता है सम्पन्न बनने का पुरुषार्थ करना है। बाबा की इच्छा है मेरा बच्चा मेरे समान सम्पन्न बने। उसके लिए हमारे में कोई अवगुण नहीं हो। न किसी का अवगुण मुझे दिखाई पड़े इस पुरुषार्थ के बिना कोई सम्पन्न नहीं बन सकेंगे।

सबमें गुण हैं तब तो बाबा के घर में बैठे हैं, जैसी स्मृति है वैसी वृत्ति दृष्टि नेचुरल काम करती है। वृत्ति में भावना है, सारी दुनिया में बाबा के बच्चे हैं, अब तो गिनती भी नहीं कर सकते हैं। हर एक मेरी भावना कैच करे, भावना में जो रीयल है वो उसको लग जायेगी और जो फालतू है निकल जायेगा। जरा एक मिनट भी अगर कोई ने फालतू काम में गंवाया तो बाबा क्या कहेगा?

प्रश्न:- अगर हमारे से कोई पाप कर्म, गलतियाँ होती हैं, तो उससे किसी को दुःख पहुंचता है लेकिन कभी कभी हमारे से

अन्जाने में किसी को दुःख मिलता है तो वो हिसाब-किताब कैसे गिनती होता है?

उत्तर:- मेरे से किसी को कुछ दुःख न मिले, इस भावना से मैं आज जिन्दा हूँ। पहली बात हम किसी को दुःख न देवें, दूसरी बात अगर जाने-अन्जाने में किसी को दुःख मिला और मुझे पता चला तो उनसे तुरंत माफी मांग लें, इसमें अहंकार नहीं होना चाहिए। मैंने इसको ऐसे थोड़ेही कहा, समझके कहा सुधरने के लिए कहा, नहीं। कोई समय था जो हम सबकी आपस में ऐसी भावना होती थी, तो बहुत रिगार्ड होता था। कोई भी आत्मा ऐसी नहीं थी जो एक दो को दुःख देवे। कोई ऐसी बात हो भी जाए तो माफी मांग लेना अथवा माफ कर देना। दुःख देना भी नहीं पर लेना भी नहीं। सूक्ष्म अगर माफी मांगना आता है तो कहीं कोई कार्य में विघ्न नहीं आयेंगे, आयेंगे भी तो उससे मुक्त हो जायेंगे, इसमें अगर देही-अभिमान नहीं होंगे तो बाबा की याद नहीं ठहरेगी। मैं सबको सुख दूँ, इसका मतलब यह नहीं कि मैं आपको पैसा दूँ तो आप खुश हो जाओ और मेरा चेला बन जाओ। उसमें कोई सुख नहीं है, वो अल्पकाल का सुख है।

तो हरेक के साथ मित्रता भाव रखना, अपना मित्र बनना।

आत्मा अपना शत्रु आप है, मित्र आप है। अगर सुधरते हैं, अच्छी जीवन बनाते हैं, अटेन्शन रखते हैं तो बाबा उसमें शक्ति देता है। मान और मनी के आधार पर एक दो से खुश होना या एक दो को खुश करना - यह कोई खुशी देना नहीं है। वैसे खुश रहना, खुशी देना बहुत पुण्य कर्म है, उनसे पाप नहीं होगा। पुण्य कर्म जितने बढ़ेंगे तो रहा हुआ कोई भी पाप होगा वह अपने आप मिट जायेगा।

तीन बारी ओम् शान्ति करने का यही मतलब है - मैं कौन हूँ, किसकी हूँ, इतना कर्म का ज्ञान हो ना। जिसकी हूँ उसने कर्म की गति बताई है, कर्मों की गति बहुत गहरी है। जितना गहरा ज्ञान कर्मों की गति का यूज करते हैं, उतना विकर्मों से बच जाते हैं।

हम सब ब्राह्मणों की मरजीवा लाइफ है यानि पुरानी लाइफ जो लौकिक रीति से थी वो भले अच्छे घराने की होगी परन्तु अभी मैं ईश्वर के घर की हूँ, तो मरजीवा जीवन में पुराने लाइफ की कोई

भी बात है और किसी की भी बात है वो मेरे में न हो। बीती सो बीती, अभी के समय में प्रेजन्ट रहना है तब बाबा मेरे सामने प्रेजन्ट रहेगा। भगवान के लिए कहते हैं वो जानी-जाननहार है, हाज़िरा हज़ूर हैं, यह विश्वास, भावना भक्तिमार्ग में था। परन्तु अभी प्रैक्टिकल भगवान के बच्चे हैं, उसने हर कर्म के गति की जानकारी दी है। यह भी बताया है तुम याद में रहो तो पास्ट इज़ पास्ट कर दूंगा। प्रेजन्ट क्या करने का है वो भी सिखाता है।

तो एक है वायुमण्डल अच्छा बनाना, वायुमण्डल में अपने आप परिवर्तन आता है, कहना नहीं पड़ता है। दूसरा वातावरण, जैसी वार्ता होगी, बातचीत होगी। ब्राह्मणों की भाषा क्या है, ब्राह्मण बोलता कैसे है, ब्राह्मण खाता क्या है? खाते समय न खुद किसी से बात करें, न उससे कोई बात करे। हमको एक दो के साथ भी इतना रिगार्ड हो। साथ में खाये या अकेले में खाये, शान्ति से याद में खाये। यह भी एक सच्चा प्यार है। अच्छा - ओम् शान्ति।

“नाँलेजफुल के साथ अनुभवीमूर्त बनो फिर सबको अनुभव कराओ”

(गुल्जार दादी जी)

ओम् शान्ति शब्द कहने से ही अपने स्वरूप की याद आ जाती है। यह भी एक मंत्र है। दूसरा बाबा शान्ति का सागर है उसकी भी स्मृति आती है साथ-साथ अपना घर जो शान्तिधाम है उसकी भी स्मृति आ जाती है। तो जब भी हम ओम् शान्ति शब्द बोलते हैं तो हमें तीनों ही स्मृति आती हैं और स्मृति से समर्थी आती है। कैसी भी समस्या हो लेकिन तीनों ही याद आ जायें - स्वयं का रूप, बाप और अपना घर, अगर यह तीनों बातें आप अभी एक सेकण्ड में याद करो, अनुभव करो तो क्या कोई समस्या आपके आगे ठहर सकती है? जहाँ बाबा याद आ गया, अपने घर की याद आ गई, अपने स्वरूप की स्मृति आ गई वहाँ समस्या क्या होगी? लेकिन ओम् शान्ति तो कह देते हैं, अर्थ स्मृति में नहीं आता है। तो कभी भी कोई भी समस्या आवे, जैसे आग लगती है तो फौरन क्या याद आता है? पानी। ऐसे जब हम ओम् शान्ति कहते हैं और स्मृति स्वरूप हो जाते हैं, तो स्वतः ही सारी समस्यायें खत्म होंगी। जैसे यहाँ अन्धियारा हो जाये और हम लाइट का स्वीच ऑन करें तो अन्धकार स्वतः ही चला जाता है ना। लाइट का आना अन्धकार का स्वतः ही जाना। ऐसे ही यह भी अभ्यास अगर करो तो कोई भी बात आवे, तो अर्थ सहित तीनों याद से ओम् शान्ति कहो तो समस्या ठहर नहीं सकती है। ऐसा अनुभव है?

बाबा ने हम टीचर्स को गुरुभाई कहा है, गुरु के भाई, इतनी बड़ी सीट दी है ना। सभी मुरली सुनाते हैं ना। गुरु की जो गद्दी

है, मुरली सुनाने की, वो बाबा ने किसको दी? टीचर को। कोई भाई वा कोई स्टूडेंट कहे हम भी रोज मुरली सुनायें तो आप देंगी, नहीं ना। टीचर को ही देते हैं इसलिए बाबा हमको गुरुभाई कहता है, तो बाबा ने महिमा भी की है टीचर्स की कि मेरे समान हैं, गुरुभाई हैं, लेकिन बाबा इशारा देता कि जो कुछ कहते हो उसका पहले अनुभव हो। मैं आत्मा हूँ, शरीर अलग है, आत्मा अलग है लेकिन आत्मा जिस समय अनुभव होगी, तो आत्म-अभिमानि बनने से सेकण्ड में बाप के साथ कनेक्शन स्वतः ही जुट जायेगा। हम सब टीचर बनें क्यों? सरेण्डर हुए क्यों? जब हम समर्पण हुए बाबा के प्रति तो सबसे पहले हमको बाबा के प्यार ही ने आकर्षित किया ना। ज्ञान तो पीछे समझा, चाहे बहनों द्वारा बाबा ने दिया, दादियों द्वारा दिया या टोली द्वारा मिला क्योंकि कईयों को टोली भी प्रेम की आकर्षण करती है। लेकिन पहले-पहले परमात्म प्यार ने आपको आकर्षित किया। तो उसी प्यार में कोई खोये रहें तो आप सोचो उनकी स्थिति कितनी ऊंची और श्रेष्ठ होगी! फिर ऐसों के आगे समस्या और संस्कार क्या हैं, कुछ नहीं क्योंकि यही दो बातें सबको परेशान करती हैं जिसको कहते हैं हम चाहते नहीं हैं लेकिन मेरी नेचर ही ऐसी है।

तो पहले यह सोचो कि समस्यायें क्यों आती हैं? पुरुषार्थ तीव्र क्यों नहीं होता है? कमजोरियाँ क्यों आती हैं? और चाहते भी खत्म नहीं हो पाती हैं तो उसका कारण क्या है? आत्म-अनुभूति की कमी है। अपने को आत्मा समझ बाबा को याद करने के

अभ्यास की कमी है। तो मैं कहने से ही आत्मा का रूप सामने आता है, अनुभव होता है? अगर आत्म-अनुभूति नहीं हुई, तो कभी भी अविनाशी प्राप्ति की अनुभूति नहीं होती है। सोचने से आयेगा अच्छा, मैं आत्मा सुख-स्वरूप हूँ, शान्त-स्वरूप हूँ, प्रेम-स्वरूप हूँ, परमात्मा के बच्चे हैं, ये सोचेंगे जरूर। एक है सोचना, एक है अनुभव करना। तो यह अपने से पूछो मुझे आत्मा का अनुभव है? अभी इस बात के अनुभवी बनने का अभ्यासी बनो, बाबा भी कहते इसकी थोड़ी कमी है। अगर अनुभव हो जाये तो वो भूलता नहीं है। बाबा कहते नॉलेजफुल बहुत हैं लेकिन अनुभवी मूर्त नहीं है। तो जो भी प्रॉब्लम्स हैं वो कर्म का ही सूक्ष्म रूप हैं, संस्कार का ही परिणाम सामने आता है इसीलिए बाबा समय प्रति समय हमको आत्म-अभिमानि स्थिति का अनुभव करने के लिए कहता है।

ट्रैफिक कंट्रोल करो, माना संकल्पों की ट्रैफिक बन्द करके साइलेंस स्वरूप की स्मृति में रहो। साइलेंस स्वरूप तो आत्मा ही है। ऐसे समय व्यर्थ वा साधारण संकल्प की तो बात ही नहीं है। अभी बाबा ने 8 बारी ड्रिल की बात कही, वो इसीलिए कहा कि बीच-बीच में बार-बार यह अभ्यास करते रहने से लिंक जुटा रहता है जिससे निरंतर साइलेंस स्वरूप आत्मा का नशा (स्थिति) रहे क्योंकि लिंक टूटा फिर जोड़ा तो इसमें मेहनत भी लगेगी, टाइम भी लगेगा। तो चेक करते रहो और चेन्ज करते रहो। योग किया या युद्ध किया, यह तो खुद को ही पता पड़ता है। मन के अन्दर की गति (स्थिति) क्या है, वो हम ही जानते हैं क्योंकि आत्म-अभिमानि नहीं या मन के ऊपर कंट्रोल नहीं तो हमारा वायदा क्या है? मनजीते जगतजीत कैसे बनेंगे! मायाजीत कैसे

बनेंगे! तो जितना समय चाहे मन कंट्रोल में रहे, यह प्रैक्टिस बहुत चाहिए। कर्म-कॉन्सेस की जगह सोल-कॉन्सेस की स्थिति हो, इसके लिए 8 बारी क्या, पर बहुत बार निरंतर इसका अभ्यास करते रहना पड़ेगा तभी आदत पड़ जायेगी।

मन को विन करो तो वन नम्बर में आ जायेंगे। मन की मालिक आत्मा है, तो मन के मालिक बनो तब कर्मन्द्रियाँ ऑर्डर मानेगी। तो मैं आत्मा मालिक हूँ, यह स्मृति पक्की हो जाये, नहीं तो वही पुराने संस्कार प्रकट होते रहेंगे, बार-बार धोखा खाते रहेंगे, परेशान होते रहेंगे। तो मतलब अमृतवेले योग का महत्व अनुभव में हो। अमृतवेले से लेके बाबा मेरे लिए आता है, हमारा टीचर हमारे लिए आता है, बाबा वाणी सुनाने हमारे लिए आता है, खास हमारे को पढ़ा रहा है, ऐसे स्वयं को एक योग्य स्टूडेंट समझ करके बैठो। अभी एक सेकण्ड में मैं आत्मा हूँ, उस अनुभूति में रहो...और कुछ नहीं सोचना...

तो सभी ने अनुभव किया या युद्ध की? इसके लिए रोज़ कोई न कोई स्वमान स्मृति में रखो और उसको चेक करो तो अनुभवी मूर्त बनना है। जो हम कहते हैं, उसके अनुभव में रहें। परमात्मा ही हमारा सब कुछ है, यह अनुभव है? तो अनुभवी मूर्त बनेगी तो सब समस्यायें खत्म हो जायेंगी क्योंकि मालिक बन गये, करनकरावनहार बन गये, तो वो वायब्रेशन वायुमण्डल को पॉवरफुल बनाता है। ऐसे शक्तिशाली वायुमण्डल में जो भी स्टूडेंट आयेंगे उन्हें भी मदद मिलेगी फिर आपका सेन्टर देखो कितना उन्नति को पाता है। तो खुद अनुभवी बनके वातावरण को अनुभव की शक्ति दो, स्टूडेंट को हिम्मत दिलाओ अनुभव की। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

बुद्धि पर श्रीमत रूपी लॉक लगाने वाला ही लक्की है...

हम सभी प्यारे बाबा का हर मानव मात्र को शुभ सन्देश, शुभ पैगाम पहुंचाने वाले पैगम्बर अथवा संदेशी हैं। पैगम्बर कौन होता है? इस वैराइटी झाड़ में देखेंगे तो जो भी अपना-अपना धर्म स्थापन करके पैगम्बर बने हैं, वह आत्मायें अपने-अपने समय पर अपने प्यारे बाप के घर से डायरेक्ट आने के कारण सतोगुणी हैं फिर पीछे चक्र में आते हैं लेकिन हम पैगम्बर उन सबसे निराले हैं। वे बाप के घर से मर्ज हुई आत्मायें आती हैं और हमें बाप सम्मुख में नॉलेज देकर पावन बना रहे हैं। बाप ने हमें सिर्फ नॉलेज नहीं दी लेकिन अपना बनाकर अधिकारी बनाया है, वर्सा दिया है। उन पैगम्बरों को तो कहा आप अपना-अपना पिल्लर

खड़ा करो और हमें पैगम्बर बनाया कि तुम्हें सारे विश्व का नव निर्माण करना है। पुराने को खत्म कर नया करना है। सारी विश्व की आत्माओं को मुझ बाप का पैगाम देना है।

बाबा ने हम बच्चों को इस बेहद झाड़ की जड़ में राजयोगी बनाकर बिठाया है – नव निर्माण के लिए। याद की शक्ति का, पवित्रता की शक्ति का जल डालना है। बाबा ने हमें सारे नव निर्माण की नींव पर रखा है। जब कोई मकान बनाते तो उसका पहला आधार नींव पर रहता है। जितना फाउन्डेशन पक्का होगा उतना इमारत का प्लैन रखेंगे। वह पैगम्बर कोई मकान के फाउन्डेशन नहीं, वह तो मरम्मत करने वाले हैं। लेकिन हमें तो

नई दुनिया के नव निर्माण के लिए फाउन्डेशन में बाबा ने अन्दर रखा है। हमारा बाबा है फाउन्डर, उसने हमें फाउन्डेशन में रखा है और कहा इसमें योग का बीज डालो, पवित्रता का बीज डालो और इस ज्ञान की शक्ति से इस इमारत को मजबूत करो।

एक तरफ हम नींव हैं दूसरे तरफ हमें बाबा का पैगाम देना है कि बाप आया है – नव निर्माण करने। हमें बाबा ने सन्देशी बनाया है कि चारों तरफ मेरा सन्देश दो। एक तरफ हम राजयोगी, पवित्रता का दान देने वाले योगी बच्चे हैं, हमारा योग ही सहयोग है। पवित्रता ही हमारा सहयोग है। यही हम बाप को नव निर्माण के लिए सहयोग देते हैं। हम नव निर्माण के आधार हैं। हमारे आधार पर ही सृष्टि का उद्धार होना है। दूसरा हम पैगम्बर हैं।

वह पैगम्बर आते हैं अपना धर्म स्थापन करने और हम कल्प के आदि में आये अभी फिर जा रहे हैं। अभी हम ऐसी नींव डाल रहे हैं जो 21 जन्म तक हमारा मकान सदा सजा सजाया रहेगा। तो हरेक ऐसी अपनी जवाबदारी समझते हो कि हम इस जड़ में बैठे हैं। अपनी कूट-कूट कर नींव पक्की कर रहे हैं? हमारा फाउन्डेशन है बुद्धियोग, नींव है याद की यात्रा। अगर हम नींव डालने वालों की बुद्धि भटकती है तो मकान का क्या होगा! अगर नींव डालने वाले, नींव डालते-डालते इधर-उधर चले जायें तो उस नींव का क्या होगा! हम सभी नींव में हैं, कहते भी हैं बाबा हम आपके हैं। हमें तो सर्विस की बहुत धुन है। लेकिन बुद्धि को बाहर भटकाते, तो वह नींव हिलेगी या मजबूत होगी? अगर नींव में बैठे-बैठे निकल जाते तो उसके लिए बाबा कहता - तुम्हें 100 गुणा दण्ड मिलेगा। अगर आज कोई कान्ट्रेक्टर लिखा पढ़ी करके कान्ट्रेक्ट ले और पीछे धोखा दे तो उस पर केस चल जाता। आप ने भी बाबा के लेज़र में नाम लिखाया, फार्म भरा अब कहो मैंने तो यह सोचा ही नहीं था कि फार्म भरा माना फंस गये। सोच कर फंसे ना! अच्छाई के लिए फंसे ना! बाप के प्यार में फंस गये। ठेका ले लिया ना! अब निकलेंगे भी तो कहाँ जायेंगे। हट्टी तो एक ही है। भागे तो भागे कहाँ। कोई रास्ता नहीं, लॉक लग गया है। जिसको लॉक लगा वही लकी है, हम बाबा की लॉक के अन्दर हैं माना श्रीमत के अन्दर हैं, हमारा लॉक है श्रीमत।

बाबा ने हमें पैगम्बर बनाया है, परन्तु पैगम्बर कभी-कभी कहते मेरा माइन्ड डिस्टर्ब है। हूँ मैं निर्माण करने वाला लेकिन खुद का निर्माण करना मुझे नहीं आता। तो हम समझें कि हम दूसरों के लिए पंडित हैं। स्व से सृष्टि का निर्माण होगा या सृष्टि से स्व का? तो हरेक चेक करो कि मैं स्व का निर्माण कर रहा हूँ? क्या निर्माण करने वाला कभी बिगड़ेगा? अगर मैं बिगड़ गई तो क्या मैं बिगड़ी को बनाने वाली हुई या बनी हुई को बिगाड़ने वाली? उस टाइम मैं पैगम्बर कौन सा संदेश सबको देते? बिगड़ने

का या निर्माण करने का? कईयों का मूड एकरस से निकल कर आफ हो जाता। यह कितनी अच्छी बात है। उस समय हमारी सूरत से कौन सा पैगाम मिलता है? नव निर्माण का? कई कहते मेरे में देह-अभिमान बहुत है। पर बाबा तो जानता है ना कि हैं ही सब देह-अभिमान। मैं इन गिरी हुई आत्माओं को ही देही-अभिमानि बनाने आया हूँ। फिर बाबा को क्यों कहते – मेरे में देह-अभिमान है! अगर सर्जन को कोई पेसेन्ट कहे हे सर्जन मेरी तो वही बीमारी है, तो यह भी उसकी इनडायरेक्ट इनसल्ट हुई ना। अगर कहते मेरे में वही का वही देह-अभिमान है तो बाबा का मैंने कितना रिस्पेक्ट किया! यही पढ़ाई की रिजल्ट सुनाई? बाबा ने पढ़ाया देही-अभिमानि बनो, हम जवाब देते हमारे में देह-अभिमान है। तो क्या यही प्यार का जवाब है? अगर अभी तक मेरे में वही देह-अभिमान है तो शूद्र कुमार और ब्रह्माकुमार में अन्तर ही क्या रहा? फिर कहेंगे आप जो भी समझों। तो मैं समझूँ तू राजयोगी नहीं हो ना!

कहते हैं बाबा मुझे और कुछ नहीं चाहिए सिर्फ मुझे सभी प्यार से चलायें। मैं पूछती बाबा प्यार का सागर है, क्या वो प्यार नहीं दे रहा है, उनसे ज्यादा और कोई प्यार देने वाला है? चलाने वाला बाबा या हम तुम? प्यार का सागर हमें प्यार से पाल रहा है। हमें नया जन्म दिया, वर्सा दे रहा है, हम उसकी पालना के अन्दर हैं, वह हमें अति प्यार से इस पुरानी दुनिया से नई दुनिया में ले चलता। कितनी बार कहता ओ मेरे मीठे मीठे बच्चे, यह कितने प्यार के बोल हैं। बाबा ने यह बोल सबके लिए बोला है या एक दो के लिए? तुम किसको बोलते कि हमें प्यार से चलाओ? किसको अक्ल सिखाते हो?

बाबा ने हमें मंत्र दे दिया - जो देखते हो वह न देखो, जो न दिखाई देता है उसे याद करो। भिन्न-भिन्न संस्कार तो कर्मों का हिसाब-किताब है। मुझे कर्म का खाता चुक्त्तू करना है ना कि बनाना है। मैं सब हिसाब-किताब चुक्त्तू करने, कर्मातीत बनने के लिए बैठी हूँ फिर मैं अपना हिसाब-किताब संस्कारों के वश क्यों बनाऊँ!

अगर हम हर घड़ी यही समझें कि हम स्टेज पर हैं, अगर कोई स्टेज पर बैठ मूड आफ करे, रोता रहे तो वह सबको अच्छा लगेगा? उस समय मुझे सबसे प्यार मिलेगा? स्टेज पर बैठ कर रोओ तो सब देखें कि मैं बी.के. कितना दुःखी हूँ, मैं कितना उदास हूँ, जब गुस्सा आता है तो स्टेज पर जाकर गुस्सा करो, सब देखें मेरा चेहरा कैसा है। मैं सुन्दर हूँ या काला हूँ! हूँ तो मैं पैगम्बर लेकिन क्रोध वाला हूँ। रोने वाला हूँ। शायद यह गुस्सा भी मेरी सर्विस करे? फिर देखने वाले कहते - इनका यही प्रैक्टिकल का ज्ञान है! कहते हैं मेरी वृत्ति दृष्टि खराब होती है, मैं कहती तू खराब हो। बाबा हमें काले से गोरा बनाता फिर कहते

दृष्टि खराब होती। खराब रावण है या राम? राम का होकर रहो। अगर सीता कहे मेरी तो वृत्ति खराब हो जाती तो राम पसन्द करेगा? राम के बच्चे होकर मेरी खराब वृत्ति जाती। लज्जा नहीं आती? फिर कहते क्या करें, संग ऐसा है तो जरूर रावण का संग है, बाप का तो नहीं है। हम अन्धों को बाबा ने लाठी दी, तीसरा नेत्र दिया। अब हम पुराने नहीं, हमारा पुराना जन्म खत्म हुआ, जब हमारा नया जन्म, हम नयी स्थापना में हैं फिर क्यों कहते

हमारा तो पुराना संस्कार है। हमेशा समझो हम नयी स्थापना करने वाले, नये अधिकारी हैं, नया राज्य लेने वाले हैं। जब न्यू बर्थ हो गया तो पुराना हिसाब-किताब समाप्त हुआ। ज्ञान कहता है सब बातों से प्रूफ हो जाओ। गुस्सा, उदासी, गन्दी वृत्ति सबसे प्रूफ। जब प्रूफ होंगे तो बाबा को प्रूफ दे सकेंगे। बाबा के सपूत बच्चे कहलायेंगे। अच्छा - ओम् शान्ति।

वरिष्ठ भाईयों की भट्टी में चली हुई वर्कशाप (कार्यशाला) टॉपिक - ईश्वरीय परिवार को सदा उमंग-उत्साह में रखने की योजना

1. सभी के प्रति शुभ-भावना और शुभ कामना रखें।
2. झुक-झुक, मर-मर, सीख-सीख का मंत्र याद रखें - मैं सबसे ऐसा व्यवहार करूँ, जैसा व्यवहार मैं स्वयं चाहता हूँ। दिल में क्षमाभाव रखें।
3. अपने से बड़ों को सम्मान दें और छोटों को प्यार दें।
4. मुझे कौन मिला है, सारे संसार का मालिक, इस प्राप्ति को याद करते रहें।
5. सबकी विशेषता ही देखें, उसका वर्णन करें। कमी-कमजोरी समायें, उसका वर्णन न करें, न चिन्तन करें, उस आत्मा को आगे बढ़ायें।
6. आज बाबा ने क्या कहा? इसकी याद दिलाते रहें।
7. स्वयं बिजी रहना और औरों को करना, उन्हें उठाना, उन्हें सेवा सौंपना, उनसे विचारों की लेन-देन करना और सम्मान देना।
8. चारों ही सब्जेक्ट में कुछ न कुछ नवीनता लाना और उसे सबके साथ बाँटना।
9. लक्ष्य के प्रति सबको जागृत करना, साथ लेना, सहयोग लेना।
10. परिवार के परस्पर मददगार बनना।
11. अपने साथियों को सेवा में इन्वाल्व करें - शामिल करें।
12. सबके प्रति स्नेहभाव रखना - उनकी विशेषताएं देखना।
13. उनके काम को एप्रिसिएट - प्रशंसा करना। उनके प्रति स्वीकार भाव रखना। अगर जवाबदारी दें तो साथ ही साथ उसे कार्यान्वित करने के अधिकार भी देना। उनके कार्य का मूल्यांकन बाद में करना।
14. स्वयं को बाबा का राइट हैण्ड समझें।
15. सत्यता-सभ्यता-सफाई बनायें रखें।
16. अलग-अलग भट्टियाँ करने के बजाए सारे परिवार की एक साथ भट्टी करें। भाई-बहन, कुमार-कुमारी, अधरकुमार, वरिष्ठ या नये जैसे विभाग न करें।
17. उमंग-उत्साह में स्वयं रहें और स्वयं इन चारों मर्यादाओं

का पालन करें।

राखी - अर्थात् पवित्रता, साक्षी अर्थात् न्यारापन, सखा एक शिवबाबा, सारथी स्वयं अर्जुन बने रहें, बाबा को सारथी बना कर चलें।

18. जो मिला है, जो मिल रहा है और जो मिलना है, उसकी स्मृति में रहें।
19. सामूहिक योग भट्टी करें और परस्पर योगदान का प्रोजेक्ट उठाकर उसका परिणाम चेक करें।
20. हम स्वयं पूज्य और पूर्वज हैं, इस बात की स्मृति रखें और स्मृति दिलाएं।
21. मान-मर्तबे की न कामना रखें, न उसे पकड़े रखें - त्याग कर औरों को चान्स दें।
22. साथी-सहयोगी सबको पुरुषार्थ में आगे बढ़ाने का कार्य करें।

मैं स्वयं यहाँ से जाकर क्या करूँगा - इस गुप ने एक्शन प्लान इस प्रकार बनाया:-

1. मैं परिवार पर अटेन्शन दूँगा।
2. साथियों की विशेषताओं को उजागर करूँगा।
3. साथी-सहयोगी भाई-बहनों को सेवा में साथ लूँगा।
4. सबका आदर करूँगा।
5. सबसे सहज पारिवारिक संबंध के आधार पर संपर्क रखूँगा।
6. अपनी वाणी में व्यर्थ का त्याग कर समर्थ वाणी का ही उपयोग करूँगा।
7. सबकी विशेषता के अनुसार सेवाओं में उनको चान्स दूँगा।
8. स्वयं खुश रहूँगा और सबको खुशी बाटूँगा।
9. साथियों को आगे रखूँगा।
10. स्वयं सैम्पल बनकर प्रेरणा दूँगा।
11. मैं स्वयं 1 मास का योग के प्रयोग का प्रोजेक्ट लेकर सबको पालना दूँगा, उन्हें उठाऊँगा और आगे बढ़ाऊँगा।